मूलमंत्र : शिक्षा वह शेरनी का दूध है जो पियेगा वो शेर की तरह दहाड़ेगा

शिक्षाविद् और स्वतंत्र भारत के प्रथम कानून मंत्री भारत रत्न बाबा साहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर

आज संपूर्ण राष्ट्र संविधान निर्माता एवं जनक रहे शिक्षाविद्, और स्वतंत्र भारत के प्रथम कानून मंत्री डॉ भीमराव अंबेडकर की 14 अप्रैल 2026 में भारत देश 135वीं जयंती मना रहा है। आइए मैं श्रीमती दिव्या रावत गर्ग उण्डू आज संविधान निर्माता डॉ. भीमराव अम्बेडकर के संदर्भ में एक लघु आलेख पेश कर रहा हूं आशा है कि आपको पसंद आयेगा।

इनका जन्म 14 अप्रैल 1891 मैं मध्य प्रदेश इंदौर सैन्य छावनी मह मराठी परिवार में हुआ था पिता रामजी मालोजी सूबेदार माता भीमाबाई की 14 वी संतान थे डॉक्टर भीमराव अंबेडकर हिंदू महार जाति से संबंध रखते थे जिसे समाज में अछूत जाति कहा जाता था। 6 दिसंबर 1956 को मधुमेह की लंबी बीमारी से दिल्ली में अपने निवास पर 65 वर्ष की आयु में निधन हो गया समाधि स्थल चैत्य भूमि मुंबई डॉ बाबा साहब की दो पत्नियां थी एवं इकलौते पुत्र डॉ यशवंत अंबेडकर हैं। व्यवसाय भारतीय विधिवेत्ता, अर्थशास्त्री, राजनीतिज्ञ, शिक्षाविद्, समाजसुधारक स्वतंत्र भारत के प्रथम कानून मंत्री बने उन्होंने अछूतों (दलितों) के खिलाफ सामाजिक भेद भाव के विरुद्ध अभियान चलाया भारतीय संविधान तथा राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। प्रसिद्ध विचार बुद्धि का विकास मानव-अस्तित्व का अंतिम लक्ष्य होना चाहिए शिक्षित बनो संगठित रहो संघर्ष करो शिक्षा शेरनी का दूध है, इसे जो पिएगा वह शेर की तरह जरूर दहाड़ेगा जहां नैतिकता और अर्थशास्त्र के बीच संघर्ष होता है, वहाँ जीत हमेशा अर्थशास्त्र की होती है। किसी भी कौम का विकास उस कौम की महिलाओं के विकास से होता है।

शैक्षिक योग्यता बॉम्बे विश्वविद्यालय से स्नातक- बॉम्बे विश्वविद्यालय से समाजशास्त्र, राजनीतिक शास्त्र, अर्थशास्त्र और मानव विज्ञान में परास्नातक, कोलंबिया विश्वविद्यालय, न्यूयॉर्क से पीएच.डी., लंदन स्कूल ऑफ़ इकोनॉमिक्स से एम.एससी., ग्रेसिन, लंदन से बैरिस्टर (Barrister-at-law), लंदन स्कूल ऑफ़ इकोनॉमिक्स से डी. एससी., कोलंबिया विश्वविद्यालय, न्यूयॉर्क से एलएल.डी., ओस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद, भारत से डी.लिट.

डॉ अंबेडकर की 15 वर्ष की उम्र में 9 वर्ष की लड़की रमाबाई अम्बेडकर से 1906 में विवाह हुआ पत्नी रमाबाई अंबेडकर का 1935 में निधन हो गया। 1897 में, भीमराव अपने परिवार के साथ मुंबई चले गए और वहां एल्फिंस्टन हाई स्कूल से प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त की। जहां अम्बेडकर एक मात्र अस्पृश्य छात्र थे। 22 साल की उम्र में वह संयुक्त राज्य अमेरिका चले गए। उन्होंने मानव विज्ञानी अलेक्जेंडर गोल्डनवेइज़र द्वारा आयोजित एक सेमिनार में 'भारत में जातियां : प्रणाली, उत्पत्ति और विकास' पर एक लेख प्रस्तुत किया, जो उनका पहला प्रकाशित कार्य था। अक्टूबर 1916 में, डॉ. भीमराव अम्बेडकर लंदन चले गए और वहाँ «ग्रेज़ इन» में बैरिस्टर कोर्स (विधि अध्ययन) के लिए दाखिला लिया और साथ ही लंदन स्कूल ऑफ़ इकोनॉमिक्स में दाखिला लिया। जहां उन्होंने अर्थशास्त्र की डॉक्टरेट थीसिस पर काम करना शुरू किया। जून 1917 में, वह अपना अध्ययन अस्थायी रूप से बीच में ही छोड़ कर भारत लौट आए। भारत लौटने पर भीमराव बड़ौदा राज्य के सेना सचिव के रूप में कार्य करने के लगे। जहां कुछ दिन बाद उन्हें पुनः भेदभाव का सामना करना पड़ा। अंत में, बाबा साहेब ने नौकरी छोड़ दी और एक निजी ट्यूटर और एक लेखाकार के रूप में काम करने लगे।

वर्ष 1918 में, वह मुंबई में सिडेनहम कॉलेज ऑफ कॉमर्स एंड इकोनॉमिक्स में राजनीतिक अर्थव्यवस्था (Political Economy) के प्रोफेसर बने। जहां उनका अन्य प्रोफेसरों के साथ पानी पीने के जाँग को साझा करने पर विरोध किया गया। भारत सरकार अधिनियम 1919 को तैयार कर रही «साउथबरो समिति» के समक्ष जब भीमराव अम्बेडकर को गवाही देने के लिए आमंत्रित किया गया। तब अम्बेडकर ने दलितों और अन्य धार्मिक समुदायों के लिए पृथक निर्वाचिका (separate electorates) और आरक्षण देने की वकालत की। वर्ष 1920 में, उन्होंने मुंबई में साप्ताहिक «मूकनायक» के प्रकाशन का कार्य शुरू किया। जिसका इस्तेमाल अम्बेडकर रूढ़िवादी हिंदू राजनेताओं व जातीय भेदभाव से लड़ने के प्रति भारतीय राजनैतिक समुदाय की अनिच्छा की आलोचना करने के लिए करते थे। बॉम्बे हाईकोर्ट में कानून की प्रैक्टीस करते हुए, उन्होंने अस्पृश्यों की शिक्षा को बढ़ावा दिया। उनका पहला संगठित प्रयास «बहिष्कृत हितकारिणी सभा» की स्थापना की, जिसका उद्देश्य शिक्षा और सामाजिक-आर्थिक सुधार को बढ़ावा देना था।

1930 में सत्याग्रह : वर्ष 1930 में, भीमराव अम्बेडकर ने कालाराम मंदिर सत्याग्रह को शुरू किया। जिसमें लगभग 15,000 स्वयंसेवको ने प्रतिभाग लिया था आंदोलन में जुलूस का नेतृत्व एक सैन्य बैंड ने किया था और उसमें एक स्काउट्स का बैंच भी शामिल था। पहली बार पुरुष व महिला शामिल थे जिसके परिणामस्वरूप दलितों को मंदिर में प्रवेश की इजाजत मिलने लगी। वर्ष 1932 में, जब ब्रिटिशों ने अम्बेडकर के साथ सहमति व्यक्त करते हुए, अछूतों को «पृथक निर्वाचिका» देने की घोषणा की, तब महात्मा गांधी ने इसका विरोध करते हुए, पुणे की यरवदा सेंट्रल जेल में आमरण अनशन शुरू किया वर्ष 1936 में, भीमराव अम्बेडकर ने «स्वतंत्र लेबर पार्टी» की स्थापना की, जिसने वर्ष 1937 में केन्द्रीय विधान सभा चुनावों में 15 सीटें जीती थी। वर्ष 1941 और 1945 के बीच में उन्होंने बड़ी संख्या में बहुत सी विवादास्पद पुस्तकें और पर्चे प्रकाशित किए, जिनमे «थॉट्स ऑन पाकिस्तान» भी शामिल है। जिसमें वह मुस्लिम लीग के मुसलमानों के लिए एक अलग देश पाकिस्तान की मांग की आलोचना करते हैं

संविधान में हर नागरिक की व्यक्तिगत स्वतंत्रता की गारंटी और महिला दुर्व्यवहार की निंदा : उन्होने भारत विभाजन का तो पक्ष लिया, परन्तु मुस्लिमो में व्याप्त बाल विवाह की प्रथा और महिलाओं के साथ होने वाले दुर्व्यवहार की घोर निंदा की संविधान रचयिता।

अम्बेडकर द्वारा संविधान में व्यक्तिगत नागरिक स्वतंत्रता की संवैधानिक गारंटी और सुरक्षा प्रदान की गई है, जिसमें धर्म की आजादी, अस्पृश्यता को खत्म करना, और भेदभाव के सभी रूपों का उल्लंघन करना शामिल है। इसके अलावा उन्होंने महिलाओं के लिए व्यापक आर्थिक और सामाजिक अधिकारों के लिए तर्क दिया एवं एससी एसटी ओबीसी अन्य पिछड़ा वर्ग के सदस्यों के लिए नागरिक सेवाओं, स्कूलों और कॉलेजों में नौकरियों के आरक्षण की व्यवस्था शुरू करने के लिए असेंबली का समर्थन जीता। स्वतंत्र भारत में जब राष्ट्रीय ध्वज पर विचार विमर्श किया जा रहा था, भीमराव अम्बेडकर «संविधान ड्राफ्टिंग कमेटी» के अध्यक्ष थे। जिन्होंने राष्ट्रीय ध्वज में अशोक चक्र का सुझाव दिया था

भीमराव अम्बेडकर के दूसरे शोध ग्रंथ 'ब्रिटिश भारत में प्रांतीय वित्त का विकास' के आधार पर देश में वित्त आयोग की स्थापना हुई। उन्होंने अर्थशास्त्र पर तीन पुस्तकें लिखीं : एडमिनिस्ट्रेशन एंड फाइनेंस ऑफ दी ईस्ट इंडिया कंपनी, द इवॉल्यूशन ऑफ प्रोविंशियल फाइनेंस इन ब्रिटिश इंडिया, द प्रॉब्लम ऑफ द रूपी : इट्स ओरिजिन एंड इट्स सोल्यूशन। वर्ष 1950 के दशक में भीमराव अम्बेडकर बौद्ध धर्म के प्रति आकर्षित हुए और 14 अक्टूबर 1956 को नागपुर शहर में डॉ? भीमराव अम्बेडकर ने स्वयं और अपने समर्थकों के लिए एक औपचारिक सार्वजनिक धर्मांतरण समारोह का आयोजन किया। जिसमें सबसे पहले डॉ? अम्बेडकर ने अपनी पत्नी सविता अंबेडकर एवं कुछ सहयोगियों के साथ भिक्षु महास्थवीर चंद्रमणी द्वारा पारंपरिक तरीके से त्रिरत्न और पंचशील को अपनाते हुए बौद्ध धर्म ग्रहण किया था। जय अंबेडकर, जय संविधान, भारत रत्न बाबा साहब अंबेडकर अमर रहे, सादर शत शत नमन। वंदे मातरम! जय हिन्द।

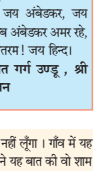

- श्रीमती दिव्या रावत गर्ग उण्डू , श्री गर्गवास राजबेरा, राजस्थान

पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय सीमा सुरक्षा बल डाबला में अंबेडकर जयंती मनाई गई

जैसलमेर। पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) डाबला में भारत के महान संविधान निर्माता डॉ. भीमराव अंबेडकर की जयंती बड़े उत्साह एवं श्रद्धा के साथ मनाई गई। विद्यालय परिसर में आयोजित इस कार्यक्रम में विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं कर्मचारियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। कार्यक्रम की शुरुआत बाबा साहेब के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित कर की गई। इस अवसर पर विद्यालय के प्राचार्य अजय कुमार जांगिड एवं शिक्षकों ने डॉ. भीमराव अंबेडकर के जीवन, संघर्ष एवं उनके द्वारा रचित भारतीय संविधान के महत्व पर प्रकाश डाला। वक्ताओं ने विद्यार्थियों को समानता, न्याय और शिक्षा के मूल्यों को अपनाने के लिए कहा। कक्षा नवमी की छात्राओं भविता सुथार,प्रेयसी रॉय और वैदेही ने भाषण द्वारा बाबा साहेब के विचारों को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया और सामाजिक समरसता और शिक्षा के महत्व को उजागर किया।

गलतफहमियां

आज के समय में परिवार , समाज आदि में कोई न कोई बात को लेकर आपस में दूरियाँ देखी जा सकती है । परिवारों में आपस में ग़लतफ़हमियाँ की वजह छोटी - छोटी बात पर या एक दूसरे के प्रति हर बात में अविश्वास आदि हैं जब यह ग़लतफ़हमियाँ ज्यादा लम्बे समय तक रह जाती हैं तो परिवार बिखर जाते हैं जों की दु :खदायी स्थिति होती हैं । समाज में ग़लतफ़हमियो की वजह से राग – द्वेष , ईर्ष्या , या अन्य कारण उत्पन्न हों जाते हैं ।

मैंने मेरे अनुभव के चिन्तन से ग़लतफ़हमी के लियें यह बात महसूस की कि जब हम किसी के लियें यह सोच ही लें की इस आदमी की हर बात में मुझे कमी निकालनी हैं या इसके प्रति कोई भी बात में हमें विश्वास ही नहीं हैं आदि तो सामने वाले के प्रति यह ग़लतफ़हमी की सोच ही बिखराव का बीजवपन करने वाली होती हैं । यह बीज लग कर लम्बे समय तक रह जाता हैं तो यह दु:खदायीं बन जाता हैं जों किसी के लियें ही हितकारी नहीं होता हैं । यह वर्तमान समय की विकट समस्या हैं । मानव को तन के साथ- साथ मन को भी साफ - सुथरा रखना बहुत जरुरी है? तन को साफ नहीं रखेंगे तो उसमें मैल जमकर दुर्गंध आने लगेगी वैसे ही मन में गलतफहमियां और कषाय आदि जब भर जाते हैं तो इनको भी नित प्रायः साफ करना जरूरी व अवश्यंभावी हों जाता हैं । तभी तो कहते हैं की मन में भर के मत जीओ या ग़लतफ़हमियाँ आदि रख कर बिल्कुल भी मत जीओ यह जों नकारात्मकता का नासूर हैं वो दु:खदायीं या विनाश करने वाला होता हैं इसलियें मन में प्रसन्नता रख कर आनन्दपूर्वक जीओ व सदा मुस्कुराके जीओ । यह तो निश्चित सत्य है कि खेत में जब तक बीज न डाले जाएँ तो कुदरत उसे घास फूस से भर या अन्य चीज़ से भर देती है और खेत में बीज डाला खेती शुरू हुई कुछ समय बाद खेत में फ़सल लहलहाने लगा जाती है जों सबको आनन्ददित करने वाली होती हैं । इसी तरह हमको भी मन को मकान की तरह साफ - सुथरा रखना चाहिए क्यूँकि मकान में सफाई नहीं होती हैं तो उसमें मिट्टी , जालें व कचरा आदि भर जातें हैं और धीरे -धीरे वह मकान खराब होने लग जाता है जो किसी के लिये रहने के लियें अच्छा नहीं होता हैं इसी तरह अगर हमारे मन में वहम और गलतफहमियां आदि का कचरा भर जाएगा तो हम मन से खुश नहीं रह पायेंगे व सही और सकारात्मक हमारी सोच नहीं हो पायेंगी और नकारात्मक सोच किसी के लियें हितकारी नहीं होती हैं । कोई भी बात हो मन में भर करके मत रखो बात आने के साथ ही उसको बाहर निकाल दो व मन को हर वक़्त हल्का रख कर व भितर से प्रसन्नता रख कर जियो । ग़लतफ़हमी के ऊपर मैं एक घटना रख रहा हूँ । एक गाँव में कुछ सन्त विराज रहे थे । साधु - सन्तों के विराजने से गाँव में धार्मिक क्रिया - कृलाप आदि अच्छें हों रहे थे । एक सन्त प्रतिदिन प्रातः काल ग्राम के बाहर एक उधान में जाकर योग - साधना करते थे । सभी कार्य अपने अनुसार हों रहे थे ।एक दिन सन्त प्रातः काल को नित - नियम अनुसार उधान में योग -साधना आदि कर रहे थे उसी समय एक मानव ने उनको वहाँ से गुज़रते हुए देख लिया । उसने गाँव में जाकर सन्त के प्रति ग़लतफ़हमी में निन्दा आलोचना आदि की बात चला दी की यह सन्त अच्छे नहीं हैं व इनकी क्रिया अच्छी नहीं हैं आदि - आदि । सन्त अपना रोज का नित - नियम - सम्पन्न कर वापिस भवन पधारे । धीरे - धीरे यह बात पूरे ग्राम में फैल गयी । यह बात सन्तों के पास आयी । सन्तों ने यह बात सन्त को बतायी । सन्त ने कहा यह कैसे हुआ ? यह कह कर सन्त ने चारों आहार का त्याग कर लिया की जब तक यह मिथ्या आरोप मेरे से नहीं हटेगा तब तक मैं पानी और अन्न का एक दाना मुँह में नहीं लूँगा । गाँव में यह बात फैल गयी । अब जीस आदमी ने यह बात की वो शाम को अपने घर में पहुँचा और उसने खाना खाया सों गया । उस आदमी के सोने के साथ ही पेट में अजीब वेदना हुई की उसको पेशाब तो लग रहा है लेकिन वो पेशाब नीचे नहीं उतर रहा है । उस आदमी ने असहय वेदना होने लियें अपने दिन - भर के किया - कृलाप को देखा उसको अपनी ग़लती का भान हुआ ।जैसे - तैसे मुश्किल से उसने रात निकाली ।अगले दिन प्रातः हुई तो प्रातः होने के साथ ही वो सन्तों के यहाँ गया व पूरी बात बताई और उसने सन्तों से अपनी ग़लती के लिये माफ़ी माँगी तो सन्तो ने कहा तुमको यह बात व्याख्यान में परिषद में कहनी होगी तो उसने कहा ठीक हैं । व्याख्यान शुरू हुआ कुछ समय बाद उसने परिषद में बीच में यह बात कह दीं । उस आदमी के पेट का वो असहाय वेदना का दर्द खत्म हों गया और सन्त ने आहार ग्रहण करना चालू कर दिया ग़लतफ़हमी खत्म हों गयी व रोज़ना की तरह नित - नियम सबका वापिस शुरू हों गया ।ग़लतफ़हमी ने क्या से क्या कर दिया ।

प्रदीप छाजेड़, बोरावड़ -9993876631

मनुमुक्त 'मानव' ट्रस्ट द्वारा स्मृति-समारोह आयोजित

राजेंद्रसिंह रावल को मिला 11,000/- का मातादीन-मूर्तिदेवी स्मृति-पुरस्कार

नारनौल (डॉ. सत्यवान सौरभ) देश के स्वाधीनता-संग्राम में नामचीन नेताओं के साथ पंडित मातादीन जैसे उन लाखों कार्यकर्ताओं का भी महत्त्वपूर्ण योगदान था, जिन्होंने स्वाधीनता की मीनार का कंगूरा बनने की बजाय, नींव का पत्थर बनना स्वीकार किया। यह कहना है सुदूर पश्चिम प्रदेश, महेंद्रनगर (नेपाल) के पूर्व मुख्यमंत्री और सांसद राजेंद्रसिंह रावल का। मनुमुक्त %मानव% मेमोरियल ट्रस्ट द्वारा स्थानीय सैक्टर-1, पार्ट-2 स्थित अंतरराष्ट्रीय सांस्कृतिक केंद्र मनुमुक्त भवन में, प्रजामंडल-आंदोलन के योद्धा और प्रमुख समाजसेवी पंडित मातादीन तथा उनकी धर्मपत्नी मूर्तिदेवी की स्मृति में आयोजित 28वें वार्षिक समारोह में, बतौर मुख्य अतिथि अपने उद्बोधन में उन्होंने कहा कि पंडित मातादीन तथा उनके साथियों ने, अंग्रेजों के साथ-साथ उनके पिट्ठू राजाओं के खिलाफ भी, प्रजामंडल-आंदोलन के माध्यम से दोहरी लड़ाई लड़ी, जिसे हमेशा याद रखा जायेगा। सिंघानिया विश्वविद्यालय, पचेरी बड़ी (राजस्थान) के कुलपति तथा भारतीय प्रशासनिक सेवा के पूर्व अधिकारी डॉ. मनोजकुमार गर्ग और भाषा आयोग नेपाल, काठमांडू के सदस्य डॉ. पुष्करराज भट्ट, सम्राट विक्रमादित्य विश्वविद्यालय, उज्जैन (मध्यप्रदेश) के कुलानुशासक डॉ. शैलेंद्रकुमार शर्मा और नगर परिषद् की पूर्व चेयरमैन तथा भाजपा महिला मोर्चा की जिला अध्यक्ष भारती सैनी ने भी, स्वतंत्रता-संग्राम और समाजसेवा के क्षेत्र में पंडित मातादीन के योगदान की चर्चा करते हुए, उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। पंडित जी के सुपुत्र और चीफ ट्रस्टी डॉ. रामनिवास %मानव% ने माता-पिता पर केंद्रित दोहे प्रस्तुत किये। उनका एक दोहा देखिये- «जीवन में जब भी मिले, खुशियाँ या अवसाद। अम्मा-बाबूजी सदा, रह-रह आये याद।।» उद्योग विकास अधिकारी डॉ. सुनील भारद्वाज द्वारा प्रस्तुत प्रार्थना-गीत के उपरांत ट्रस्टी डॉ. कांता भारती के प्रेरक सानिध्य और डॉ. पंकज गौड़ के कुशल संचालन में सम्पन्न हुए इस समारोह के प्रारंभ में संयुक्त भारतीय धर्म-संसद के प्रांतीय अध्यक्ष राकेश मेहता ने पंडित मातादीन के जीवन और कार्यों पर प्रकाश डाला, वहींओशिन शुक्ला साथी (नारनौल), डॉ. मुकुट अग्रवाल (रेवाड़ी), संजय पाठक (जैतपुर) और प्रवेंद्र पंडित (अलवर) ने, कविताओं के माध्यम से, पंडित जी की उपलब्धियों को रेखांकित किया।

ये हुए पुरस्कृत-सम्मानित : समारोह में सुदूर पश्चिम प्रदेश, महेंद्रनगर (नेपाल) के पूर्व मुख्यमंत्री और सांसद राजेंद्रसिंह रावल (महेंद्रनगर) को अंगवस्त्र, स्मृति-चिह्न, सम्मान-पत्र और 11,000/- की राशि भेंट कर मातादीन-मूर्तिदेवी जीवन-साधना पुरस्कार से तथा सिरसा की वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. शील कौशिक और अंबाला छावनी की दिवंगत साहित्यकार तथा संपादक उर्मि कृष्ण को 5000-5000/- के मातादीन-मूर्तिदेवी स्मृति-पुरस्कार से नवाजा गया, वहीं नेपाल के डॉ. पुष्करराज भट्ट (काठमांडू) और हरीशप्रसाद जोशी (महेंद्रनगर), डॉ. शैलेंद्रकुमार शर्मा (उज्जैन) और आचार्य प्रद्युम्न (नारनौल) को मातादीन-मूर्तिदेवी शिखर-सम्मान से तथा नेपाल के त्रिविक्रम पांडे (ललितपुर), भानुभक्त आचार्य और राजेंद्र नाथ (काठमांडू, भारत के डॉ. हरेराम पाठक (डिब्रुगढ़), डॉ. प्रभु चौधरी (उज्जैन), डॉ. शहेनाज अहेमद (नांदेड़), प्रो. विजयकुमार मिर्चे (महासमुंद), डॉ. ललितकुमार सिंह (दिल्ली), प्रवेंद्र पंडित (अलवर), रामानंद शर्मा (शिमला), पंकज शर्मा (अंबाला), विजय कुमार (अंबाला छावनी), मेजर शक्तिराज कौशिक और डॉ. ज्ञानप्रकाश पीयूष (सिरसा), डॉ. धर्मवीर यादव और डॉ. सुधा यादव (मीरपुर, रेवाड़ी) तथा संदीप प्रसाद, सरोज कश्यप, सुभाष कश्यप आदि (नारनौल) को, विभिन्न क्षेत्रों में उनके विशिष्ट योगदान के दृष्टिगत, मातादीन-मूर्तिदेवी स्मृति-सम्मान प्रदान किया गया।

इनकी रही उल्लेखनीय उपस्थिति : तीन घंटों तक चले इस महत्त्वपूर्ण समारोह में सिंघानिया विश्वविद्यालय, पचेरी बड़ी (राजस्थान) के उपकुलपति सुनीलकुमार सोबती, कैंपस डायरेक्टर पीएस जस्सल और पुस्तकालयाध्यक्ष डॉ. धर्मपाल बरगढ़, हकीकत यादव दिल्ली), डॉ. भंवरसिंह कसाना (महेंद्रगढ़), पूर्व जिला बाल-कल्याण अधिकारी, महेंद्रगढ़ विपिन शर्मा, बीइओ, अटेली मुकेश कुमार, डॉ. सीएस वर्मा (मंडी अटेली), वहीं नारनौल से भाजपा महिला मोर्चा की पूर्व अध्यक्ष सरला यादव, निगरानी समिति के पूर्व अध्यक्ष महेंद्र गौड़, अखिल भारतीय साहित्य परिषद् के अध्यक्ष डॉ. जितेंद्र भारद्वाज, डॉ. जितेंद्र भारद्वाज, क्षेत्रीय भूगर्भ जल वैज्ञानिक राकेश निमशेरिया, समाजसेवी रामानंद अग्रवाल, घनश्याम गर्ग और रानी सांघवी, प्रोफेसर डॉ. वंदना कुमारी, प्रमुख पर्यावरणविद् कृष्णवतार शर्मा और कृष्णकुमार शर्मा, मुरारीलाल शर्मा, एडवोकेट, श्रद्धा शर्मा, ऋतु शर्मा, डॉ. शर्मिला यादव और केबीसी फेम सचिन अग्रवाल के साथ कई गणमान्य नेपाली नागरिकों की उपस्थिति उल्लेखनीय रही।

- डॉ. सत्यवान सौरभ, कवि, सामाजिक विचारक एवं स्तंभकार, आकाशवाणी एवं टीवी पेनालिस्ट, बड़वा (सिवानी) भिवानी, हरियाणा- : 9466526148,01255281381

हिंदी साहित्य में फिर स्वर्ण पदक

एम.ए. हिंदी साहित्य की कक्षाओं के अनुभव विधि की कक्षाओं से कुछ अलग रहे डॉ. परशुराम शुक्ला विरही ने पूर्वार्द्ध में कथा साहित्य में उपन्यास और कहानी को समझाया जिसमें गोदान शामिल था ।वह कथानक को आगे बढ़ाते हुए मत्वियूर्ण अंशों की चर्चा करते रहते थे जो व्याख्या के पूछे जा सकते हैं या पिछले प्रश्न पत्रों में पूछे जाते रहे हैं प्राचीन काव्य और भक्ति काव्य दोनों वर्ष के.के. जैन के जिम्मे था जो कक्षा में आने से परहेज करते थे बुलाने पर कहते-अरे यार तुम देख लेना ,तुम लोगों को मैं क्या पढ़ाऊंगा। दोनों सात मेरे सबसे कम नंबर इन्हीं पेपरों में आये मैं खुद कभी रासो या मध्यकाल की भाषा से तारतम्य नहीं बैठा सका।

विनय पत्रिका या उस पर कोई सामग्री तो देखने को ही नहीं मिली जिससे बीस नंबर का प्रश्न तो छूट ही गया था।आलोचना शास्त्र तथा भारतीय साहित्य का इतिहास डॉ.के .सी गुप्ता लेते थे जिनके बारे में यह अफवाह थी कि प्रकाशक के कहने पर वह केशव सीरीज लिखते हैं और उसमें बी ए की परीक्षाओं के अधिकांश प्रश्न पत्र मिल जाते हैं ।उनकी एक विशेषता थी वह पढ़ते समय नाटकीय पात्र की तरह हो जाते थे ।उच्चारण में उतार-चढ़ाव मुखाकृति में परिवर्तन इत्यादि ।बाद में उन्होंने बताया कि वह पहले गांव में रामलीला नाटकों आदि में अभिनय करते थे तब से उनकी आदत पड़ गई है।वह कभी भी जोर से बोलते बोलते सामने की बेंच पर बैठे किसी भी विद्यार्थी के आगे आ जाते ।उस समय उनसे नजरें मिलाना अजीब लगता था ।उन्होंने केशव सीरीज पर एक बार कहा था कि मैं कई वर्षों से इस पर काम कर रहा हूं ।मैं हर साल प्रश्न पत्र छांटता हूं और उनके उत्तर सहित प्रकाशक सीरीज छापता है ।उसमें बीस प्रश्न होते थे।कभी ऐसा नहीं हुआ की पांच छह या सात प्रश्न उसमें से न आए हों ।परीक्षक कोई भी हो उसे वह प्रश्न पूछने ही होते हैं जो महत्वपूर्ण होते हैं ।हमारी शिक्षा पद्धति ऐसी है।मुझे इससे पैसा मिलता है।मैं अतिरिक्त मेहनत करता हूं।उसमें उनका नाम नहीं होता था।प्रकाशक केवल पैसे देता था।मगर साल भर न पढ़ने वाले ,दो-तीन दिन के पढ़ने वाले छात्रों के लिए वह सीरीज रामबाण की तरह थी।यदि तीन चार प्रश्न भी मिल जाते थे तो उनका उद्धार हो जाता था।काला संकाय के छात्र वैसे भी केवल पास होना चाहते हैं।हिंदी साहित्य की पूर्वार्ध की परीक्षा में मेरा टारगेट पैंसठ प्रतिशत था आया पैंसठ दशमलव पांच।विज्ञान तथा विधि संकाय के बाद बिल्कुल भिन्न संकाय में भी टारगेट पूरा होने से मैं निश्चिंत था कि इस बैच में मैं टॉप कर लूंगा।मेरी तैयारी भी उसी हिसाब से थी।पहला चरण सफलता पूर्वक पार कर चुका था।मेरे और दूसरे नंबर की छात्रा के बीच अठ्ठाईस नंबर का अंतर था जो उसके लिए पार करना आसान न था।कम से कम मेरे जैसे खिलाड़ी के होते हुए।मैंने फिर भी सुरक्षावश उत्तरार्द्ध में बीस नंबर का टारगेट और बढ़ा दिया।अब हुआ सत्तर से बहत्तर प्रतिशत।

एम. ए. उत्तरार्ध में के. सी. गुप्ता भाषा विज्ञान पढ़ाते थे।एक दिन कक्षा में बोले कि भाषा विज्ञान में विश्वविद्यालय का रिकॉर्ड 72 नंबर का है।तत्पश्चात स्टूडेंट लाया था ।ही सीक्योर 72 पर्सेंट ऑर्क्स ।फिर बोले ही नहीं शी ,शी सीक्योर 72 पर्सेंट मार्क्स।ही तो हो ही नहीं सकता ।मैं उनकी बात समझ गया कि व्यंग्य कर रहे हैं ।मतलब साफ है कि लड़कियां पढ़ती हैं वही नंबर लाती हैं ,लड़के तो पढ़ते ही नहीं हैं जो नंबर ला सकें ।यह क्लास में बैठी हुई लड़कियों के सामने सब लड़कों का अपमान था।खुला चेलेंज था।मैंने उनसे कहा कि ही क्यों नहीं हो सकता? इस साल यह टारगेट मैं अचीव करके बताऊंगा।बात आई गई हो गई ।बाद में भाषा विज्ञान का प्रश्न पत्र आया तो परीक्षा हाल में मेरे पसीने छूट गए।प्रश्न पत्र जीवाजी श्वविद्यालय में चल रहे बीस नंबरों के दस में से पांच प्रश्न हल करने के पैटर्न से बिल्कुल भिन्न था।

20-20 नंबरों के 10 प्रश्नों की जगह प्रत्येक प्रश्न को तीन अ ब स भागों में बांटा गया था जिसमें एक दस, दूसरा सात व तीसरा तीन नंबर का था और उन्हीं विकल्पों के साथ कोई पांच प्रश्न हल करने थे।अब परेशानी यह थी कि किसी का अ आता था किसी का ब या फिर स। प्रश्न चुनना कठिन हो गया।बात एक-एक नंबर जोड़ने की थी ।पांच सात मिनिट बाद जब इस मानसिक स्थिति से उबरा तो सोचा कि जो भी सामने है उसे हल कर लो विचार बाद में कर लेना।समय निकल गया तो वैसे ही खेल खत्म हो जाएगा ।जो भी हुआ कक्षा में दिया वचन हारने की स्थिति साफ दिख गई थी। मेरे उस प्रश्न पत्र में 66 नंबर आये जो उस वर्ष का विश्वविद्यालय का उच्चतम स्कोर था ।दूसरे नंबर पर किसी विद्यार्थी के 58 या 48 अंक आए थे फिर भी मेरी बात खाली गई इसका सदा अफसोस रहा ।होने को आधुनिक साहित्य में 81 संस्कृत में 83 नंबरों ने मेरी लाज रख ली।

आधुनिक साहित्य में 81 नंबर आने का भी एक कारण था।प्रश्न पत्र में एक प्रश्न पूछा गया था कि पाठ्यक्रम की कहानियों में से कौन सी कहानी सर्वश्रेष्ठ है और क्यों ?कारण सहित स्पष्ट कीजिए ।उस समय हमारे पाठ्यक्रम में प्रेमचंद की कहानी कफ़न भी थी और तय था कि विश्वविद्यालय के 95 प्रतिशत विद्यार्थी या कुंजी से पढ़ने वाले परंपरा का निर्वाह करते हुए उसे ही सर्वश्रेष्ठ बताएंगे और सिद्ध करेंगे।मैंने सभी कहानियों की चर्चा चार छह पंक्तियों में करते हुए ,एक एक कर उन्हें नकारते हुए प्रेमचंद की कहानी तक आया और लिखा कि यह कहानी अस्वाभाविक और अविश्वसनीय है।कोई भी व्यक्ति इतना हृदय हीन नहीं हो सकता कि घर में लाश छोड़कर बाहर शराब पीने बैठ जाए और उसे परिजन के दाह संस्कार की कोई चिंता ही न रहे।अंत में मैंने एक अन्य कहानी को तर्क के आधार पर सर्वश्रेष्ठ सिद्ध किया।कथा सम्राट प्रेमचंद की कहानी को नकारना परीक्षक को यह बताने के लिए पर्याप्त था कि परीक्षार्थी मौलिक सोच का धनी है और वाकई हिंदी साहित्य का छात्र है।उस समय मेरी आदत भी थी।मैं विश्वविद्यालय के औसत छात्रों से अलग प्रश्न चुनता था और अलग ढंग से उत्तर देने का प्रयास करता था ताकि भीड़ से अलग दिखूं ।यह मेरा हल किया जाने वाला पहला प्रश्न था ।निश्चय ही इसका प्रभाव परीक्षक पर पड़ा होगा क्योंकि आधुनिक विज्ञान में 81 नंबर विश्वविद्यालय में किसी के नहीं आते।

विशिष्ट भाषा साहित्य में संस्कृत ली थी।इसका एक निश्चित पैटर्न होता है।गद्य और पद्य की प्रसंग संदर्भ सहित व्याख्या बीस बीस नंबरों की ,फिर दस पन्द्रह नंबरों के दो श्लोक संस्कृत में शुद्ध लिखना।फिर पच्चीस तीस नंबर की व्याकरण जिसके सही होने पर गणित की तरह पूरे अंक मिलते हैं ।संस्कृत के कुछ प्रश्नों की मेरी विशेष तैयारी थी तो उसमें भी कोई परेशानी नहीं हुई। परिणाम आया तो मैं विश्वविद्यालय की प्रावीण्य सूची में प्रथम स्थान पर था ।विज्ञान के बाद कला संकाय में भी।इस बार विज्ञान संकाय वाली परेशानियां से भी नहीं जूझना पड़ा ।क्लियर कट । मेरा आगे का मार्ग प्रशस्त हो गया ।विश्वविद्यालय में प्रथम स्थान पर आने से मेरे हिंदी साहित्य में पीएच.डी. करने की उम्मीदों को पर लग गए।।

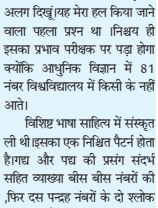

डॉ. महेन्द्र अग्रवाल, शिवपुरी म.प्र. मो.9425766485